International Journal of Arts & Education Research

तपेन्द्र कुमार चौधरी*[1], डॉ0 (श्रीमती) मालती तिवारी

शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म0प्र0।

शोध निर्देशक, प्रवक्ता, शासकीय महाविद्यालय रीवा, म0प्र0।

पृष्ठभूमि

हर शिक्षा व्यवस्था की अपनी विलक्षणताएं, चुनौतियां एवं समस्याएं होती हैं। आज वैश्वीकरण के फलस्वरूप विश्व सन्दर्भ में इन विलक्षणताओं एवं समस्याओं को एक नई आकृति, दिशा एवं गति प्राप्त हो रही है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ लगभग यही स्थिति प्रायः सभी सार्क देशों में भी दृष्टिगत है। हमारे यहाँ प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की संस्थाओं का परिमाणात्मक दृष्टि से जिस द्रुत गति रूप में विकास हुआ है, इसके चलते गुणवत्तापरक शिक्षा एवं शिक्षण उपलब्ध कराने के प्रति एक नया आयाम उभरा है जिसका कोई भी जागरूक राष्ट्र अनदेखी नहीं कर सकता। यह प्रश्न संख्यात्मक वृद्धि बनाम गुणवत्ता का नहीं वरन् गुणवत्तापूर्ण सर्वसुलभ एवं अभिगम्य शिक्षा व्यवस्था रचने का है।

शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षा, प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था का अविछिन्न अंग होती है। यह समाज एवं राष्ट्र के चरित्र, उसकी संस्कृति एवं लोकाचार से घनिष्ट रूप से जुड़ी होती है। 21वीं सदी की विकासशील प्रौद्योगिकी के दबाव, विशेष तौर से सूचना प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में संवैधानिक लक्ष्यों, राज्य की नीतियों के निर्देशक सिद्धान्तों, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं, नई प्रत्याशाओं एवं आकांक्षाओं के उभरते नए क्षितिज, नूतन ज्ञान के ज्यामितिक विकास की गति एवं सन् 2020 ई0 तक भारतीय समाज को नालेज सुपर-पावर के रूप में अपनी पहचान बनाने के संकल्पों के आलोक में भावी शिक्षा व्यवस्था से एक उपयुक्त साधकत्व प्रदान करने की अपेक्षा है। इस सन्दर्भ में शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षा के कार्यक्रमों को एक नवीन परिप्रेक्ष्य में रखते हुए, उन्हें सार्थक भूमिका निर्वहन की जिम्मेदारी सौंपनी होगी जिससे शिक्षा की प्रक्रियाओं में परिव्याप्त दोषों, विसंगतियों एवं कृत्रिमताओं पर प्रभावी रोक लग सके।

IJAER

*Corresponding Author